TRANSLATOR'S NOTE

Written to live in Hindi, not merely to arrive there

This sample approaches translation as literary recreation: faithful to the work's essence, yet free to sound as though the story were originally imagined in Hindi.

The translation preserves narrative intent, emotional weight, character relationships and philosophical meaning rather than reproducing English sentence structure. Familiar modern equivalents may therefore give way to expressions that belong more naturally to the intellectual and emotional world of the characters.

This is not an attempt to reconstruct the historical language of the Mahabharata period. It creates a period-sensitive literary register: elevated without becoming inaccessible, and natural without sounding conspicuously contemporary.

Forms of address are treated as characterisation. The movement between **आप** and **तुम** carries hierarchy, age, intimacy, authority and emotional distance—distinctions that English may leave unstated.

Selected editorial decisions

1. **Period-sensitive terminology**
   प्रमाणनिष्ठ तत्त्वदर्शी replaces the conspicuously modern वैज्ञानिक, while retaining the idea of an objective, evidence-led observer.

2. **Moral independence**
   “Incorruptible” is expressed as one who cannot be turned from truth by persuasion or faction—not merely someone immune to financial corruption.

3. **The grammar of relationship**
   Bhishma's तुम conveys seniority and intimacy; Krishna's आप and पितामह preserve reverence even during disagreement.

* A familiar word is set aside only when it narrows the intended meaning or breaks the epic register. The alternative is chosen for narrative relevance, character psychology and tonal coherence—not to decorate or unnecessarily archaise the prose.

Prologue / प्रस्तावना

English original and Hindi literary adaptation shown side by side. Superscript numbers refer to the selected editorial decisions on page 1.

ENGLISH ORIGINAL	हिंदी अनुवाद
PROLOGUE	प्रस्तावना
The story is about to end.	कहानी अब अपने अंत की ओर है।
The tenth day of the war. Kurukshetra lay unnaturally still amidst death and destruction. The jackals didn't howl. Nor any anguished cry escaped the wounded. Or the mourners.	युद्ध का दसवां दिन। मृत्यु और विनाश के बीच कुरुक्षेत्र में एक अस्वाभाविक शांति छाई थी। न सियार रो रहे थे, न ही घायल योद्धाओं के कंठ से कोई पीड़ा भरी पुकार निकल रही थी। न ही शोक मनाने वालों के विलाप का स्वर सुनाई दे रहा था।
As death stood still, with abated breath, waiting for the Grand Regent of Hastinapur's permission to merge his consciousness into eternity, Krishna waited for that consciousness to return before it faded into nothingness.	जब मृत्यु अपनी थमी हुई सांसों के साथ हस्तिनापुर के परमरक्षक की अनुमति की प्रतीक्षा कर रही थी कि वे अपनी चेतना का अनंत में विलय कर दें, तब कृष्ण उस चेतना के शून्य में ओझल होने से पहले, उसके लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे।
And Bhishma's consciousness? It slipped away into the abyss of time, fleeing the voices of the past—those anguished cries that spoke of his failures. Blood seeped from countless wounds. His eyes brimmed, dull with guilt. Words of regret escaped him, faint and broken.	और भीष्म की चेतना? वह अतीत की उन वेदना भरी आवाजों से भागती हुई, जो उनकी विफलताओं की गाथा सुनाती थीं, समय की गहराइयों में कहीं खोती जा रही थी। उनके अनगिनत घावों से रक्त रिस रहा था। उनकी आँखों में ग्लानि की एक धुंधली परत जमी थी। उनके मुख से पछतावे के शब्द अत्यंत क्षीण और टूटे हुए स्वर में निकले।
"Chitrangada... Amba... forgive me... I have failed you..."	"चित्रांगद... अम्बा... मुझे क्षमा करना... मैं तुम्हारा अपराधी हूँ..."
"Did you mean Trishala?" Krishna's gaze shifted. He looked intently.	"क्या आपका तात्पर्य त्रिशला से है?" कृष्ण की दृष्टि में एक ठहराव आया और उन्होंने एक गहरी, भेदती हुई दृष्टि से भीष्म को देखा।

ENGLISH ORIGINAL	हिंदी अनुवाद
“Trishala?” Bhishma tried to conjure her face on the canvas of his tent. Her defiant pair of eyes stared back. Or were they Amba’s? He wasn’t ready to face either. He shut his eyes. He was ready to be unmade.	"त्रिशला?" भीष्म ने अपने शिविर के परदे पर उसका चेहरा उकेरने का प्रयास किया। उसकी चुनौती देती आँखों की जोड़ी उन्हें घूर रही थी। या वे अम्बा की आँखें थीं? वे किसी का भी सामना करने के लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने अपनी आँखें मूँद लीं। वे स्वयं के अस्तित्व को मिटा देने के लिए तत्पर थे।
But between him and his death, the comfortable refuge from his guilt, stood Krishna as a sentry to whom one must pay one’s dues before passing. He stretched his hand towards his first wound, where Arjuna’s arrow had barely missed his heart muscles; it had penetrated his heart nevertheless. Krishna remembered Bhishma’s sigh from that moment—the sigh of relief. Now, it was Krishna’s turn to sigh. His reluctance manifested in the trembling of his hand as if touching that wound would take away all of Bhishma’s pain. No, he couldn’t do this man’s legacy an injustice by showing compassion now.	किंतु उनकी मृत्यु और उनके अपराधबोध की आरामदायक शरणस्थली के बीच कृष्ण एक प्रहरी की भाँति खड़े थे, जिन्हें विदा होने से पहले अपना ऋण चुकाना अनिवार्य था। कृष्ण ने अपना हाथ उनके पहले घाव की ओर बढ़ाया, जहाँ अर्जुन के बाण ने उनके हृदय की मांसपेशियों को छूते हुए भेद दिया था। कृष्ण को उस क्षण की भीष्म की वह आह याद आई—जो संतोष की एक लंबी सांस थी। अब, कृष्ण की बारी थी एक ठंडी सांस भरने की। उनकी हिचकिचाहट उनके कांपते हाथों में झलक रही थी, मानो उस घाव को छूने मात्र से भीष्म की सारी पीड़ा समाप्त हो जाएगी। नहीं, वे इस समय करुणा दिखाकर उस महामानव की विरासत के साथ न्याय नहीं कर सकते थे।
“Krishna,” Bhishma murmured, a faint smile touching his lips. “You are still here. I thought you left.”	"कृष्ण," भीष्म बुदबुदाए, उनके अधरों पर एक क्षीण मुस्कान तैर गई। "तुम अभी यहीं हो। मुझे लगा तुम चले गए।“
A pause.	दोनों के बीच एक भारी मौन उतर आया।
“Are you here to gloat about your victory?” Bhishma asked, his voice laced with the pain of betrayal.	"क्या तुम यहाँ अपनी विजय पर इतराने आए हो?[3]" भीष्म ने पूछा, उनके स्वर में विश्वासघात की पीड़ा घुली हुई थी।
“Is there a victory for any of us here, Pitamah?” Krishna asked.	"क्या यहाँ हममें से किसी के लिए भी कोई विजय शेष है, पितामह?" कृष्ण ने पूछा।
“There could have been… but you sought to surrender without fighting.”	"हो सकती थी… किंतु तुमने बिना युद्ध किए ही आत्मसमर्पण का मार्ग चुना।”
“He couldn’t be defeated your way, Pitamah. No weapons could destroy him.”	"उन्हें आपके मार्ग से पराजित नहीं किया जा सकता था, पितामह। कोई भी शस्त्र उनका विनाश नहीं कर सकता था।”

ENGLISH ORIGINAL	हिंदी अनुवाद
“So, you said… we were condemned to lose,” Bhishma exhaled.	"तो जैसा तुमने कहा था… हमारी पराजय निश्चित ही थी," भीष्म ने एक गहरी निःश्वास छोड़ी।
“We can still win…”	"हम अब भी जीत सकते हैं…"
Bhishma turned. Hopeful?	भीष्म मुड़े। उनकी आँखों में एक क्षण को आशा की लौ काँपी।
Krishna smiled.	कृष्ण मुस्कुराए।
“Ah! So, you are here to collect your so-called debt?” Bhishma scoffed.	"आह! तो तुम यहाँ अपना वह कथित ऋण वसूलने आए हो?" भीष्म ने उपहास किया।
“You owe it to the future.”	"आप भविष्य के ऋणी हैं।”
“Don’t you worry, Krishna. I have already set the wheel in motion.”	"चिंता मत करो, कृष्ण। मैंने काल का चक्र घुमा दिया है।”
“Maharishi Vyas—you tasked him to document the history of our time,” Krishna said. No question. Just an acknowledgement.	"महर्षि व्यास—आपने उन्हें हमारे समय के इतिहास को लिपिबद्ध करने का कार्य सौंपा है," कृष्ण ने कहा। यह प्रश्न नहीं था, केवल एक स्वीकृति थी।
“You knew,” Bhishma said. No question either. Just a realization.	"तुम जानते थे," भीष्म ने कहा। यह भी प्रश्न नहीं था। केवल एक सत्य का बोध था।
“Why Maharshi Vyas? Why not… say Kripacharya?”	"महर्षि व्यास ही क्यों? कृपाचार्य क्यों नहीं?"
Bhishma tried to laugh. “My Krishna had asked the same question…” And I had told him, I didn’t need a Maharishi. I needed a… scientist.”	भीष्म ने हँसने का प्रयास किया। "मेरे कृष्ण ने भी यही प्रश्न पूछा था… और मैंने उसे बताया था कि मुझे किसी महर्षि की आवश्यकता नहीं थी। मुझे एक… प्रमाणनिष्ठ तत्त्वदर्शी की आवश्यकता थी[1]।”
He coughed up more blood.	उनके कंठ से और अधिक रक्त उफन पड़ा।

ENGLISH ORIGINAL	हिंदी अनुवाद
“Only a scientist can be objective… and incorruptible,” he said.	"केवल एक प्रमाणनिष्ठ तत्त्वदर्शी ही निष्पक्ष रह सकता है—जिसे किसी आग्रह या पक्ष के लिए सत्य से विचलित न किया जा सके[2]," उन्होंने कहा।
“And yet, that comes at a cost,” Krishna whispered. “What if I tell you that the future generation will remember our time… our battle as a feud for the throne of Hastinapur?”	"और फिर भी, इसकी एक कीमत चुकानी पड़ती है," कृष्ण फुसफुसाए। "क्या होगा यदि मैं आपसे कहूँ कि आने वाली पीढ़ियाँ हमारे समय को… हमारे युद्ध को केवल हस्तिनापुर के सिंहासन के लिए हुआ एक संघर्ष मानकर याद रखेंगी?"
“Merely as a family rivalry?! How can the future forget our real struggles… of Bhagirathi… of Kali? How will they answer… why did the whole of Aryavarta jump into a family feud of Hastinapur?” Bhishma asked, horrified even at such a thought.	"मात्र एक पारिवारिक प्रतिद्वंद्विता?! भविष्य हमारे वास्तविक संघर्षों को कैसे भूल सकता है… भागीरथी के संघर्ष को… काली के संघर्ष को? वे क्या उत्तर देंगे… कि क्यों पूरा आर्यावर्त हस्तिनापुर के एक पारिवारिक कलह में कूद पड़ा था?" भीष्म इस विचार मात्र से ही भयभीत हो उठे।
Krishna prodded, “Remember you chose a scientist, Pitamah…”	कृष्ण ने बात आगे बढ़ाई, "स्मरण रहे पितामह, आपने एक प्रमाणनिष्ठ तत्त्वदर्शी को चुना है…"
Bhishma exhaled, “And a scientist records facts supported by evidence, not the silences that shape them.”	भीष्म ने निःश्वास छोड़ा, "और एक प्रमाणनिष्ठ तत्त्वदर्शी केवल प्रमाणों से सिद्ध तथ्यों को अंकित करता है, उन मौनों को नहीं जो उन्हें आकार देते हैं।”
“Then what will I be? Someone who failed to prevent the destruction of his dynasty. A spineless, old fool, who knew what was right and yet did nothing but wrong?”	"तो फिर मेरा अस्तित्व क्या रह जाएगा? एक ऐसा व्यक्ति जो अपने ही वंश के विनाश को रोकने में विफल रहा। एक रीढ़हीन, वृद्ध मूर्ख, जो जानता था कि उचित क्या है और फिर भी जिसने केवल अनुचित ही किया?"
Krishna looked straight into Bhishma’s eyes. The two pairs of eyes shared the same pain.	कृष्ण ने सीधे भीष्म की आँखों में देखा। दोनों की आँखों में एक-सी पीड़ा थी।
Krishna whispered, "Not everything that shapes an age leaves fingerprints.”	कृष्ण फुसफुसाए, "हर वह चीज़ जो किसी युग को गढ़ती है, अपने पदचिह्न नहीं छोड़ती।”
Then he slowly said, “You can change that.”	फिर उन्होंने धीरे से कहा, "आप इसे बदल सकते हैं।”
“By sharing my defense with you? Why? Because you, Krishna, you know how to sugarcoat facts?”	"अपना पक्ष तुम्हारे सामने रखकर? क्यों? क्योंकि तुम, कृष्ण, तथ्यों पर विचारों की चासनी चढ़ाना जानते हो?"

ENGLISH ORIGINAL	हिंदी अनुवाद
“Because I don’t delve into meaningless facts but into Dharma.”	"क्योंकि मैं निरर्थक तथ्यों में नहीं, बल्कि धर्म की गहराइयों में उतरता हूँ।”
“Did you just call ‘truth’ meaningless, Keshava?”	"क्या तुमने अभी सत्य को 'निरर्थक' कहा, केशव?"
Krishna asked quietly, “Then tell me, Pitamah—was your silence truth, or Dharma?”	कृष्ण ने शांत स्वर में पूछा, "तो फिर मुझे बताइए पितामह—आपका वह मौन सत्य था, या धर्म?"
“Don’t you trust my Krishna… Vyas?”	"क्या तुम्हें मेरे कृष्ण… व्यास पर विश्वास नहीं है?"
“Oh! He is incorruptible. But…”	"ओह! वे संशय से परे हैं। किंतु…"
“But?”	"किंतु?"
Krishna said, “An age will end, Pitamah. Another will rise. When Bhagirathi changes its course, do its old banks remain untouched?”	कृष्ण बोले, "एक युग का अंत होगा, पितामह। दूसरे का उदय होगा। जब भागीरथी अपना मार्ग बदलती है, तो क्या उसके पुराने तट अछूते रह जाते हैं?"
“Do you worry our story will be corrupted? You fear fables?” Bhishma laughed. “You… whose life itself is a maze of uncountable legends? Don’t you know every age reshapes its past to survive the present?”	"क्या तुम्हें भय है कि हमारी कहानी दूषित हो जाएगी? क्या तुम दंतकथाओं से डरते हो?" भीष्म हँसे। "तुम… जिनका अपना जीवन अनगिनत किंवदंतियों का एक मायाजाल है? क्या तुम नहीं जानते कि हर युग वर्तमान में जीवित रहने के लिए अपने अतीत को एक नया रूप देता है?"
“I don’t fear fables or legends, Pitamah. I fear what they quietly erase.”	"मुझे दंतकथाओं या किंवदंतियों का भय नहीं है, पितामह। मुझे उस सत्य का भय है जिसे वे चुपचाप मिटा देती हैं।”
“Let them,” Bhishma exhaled. He breathed fire. An extinguished fire. “Why should it matter to you, or to anyone? If the future wishes to ridicule our era… let them—let them think me a fool. Let them discard our struggle as a sorry tale of selfish ambition…”	"मिटाने दो," भीष्म ने एक लंबी सांस ली। मानों उनके भीतर से अग्नि की लपटें निकली हों—एक बुझती हुई अग्नि। "इससे तुम्हें या किसी और को क्या फर्क पड़ता है? यदि भविष्य हमारे युग का उपहास करना चाहता है… तो करने दो—उन्हें मुझे मूर्ख समझने दो। उन्हें हमारे संघर्ष को स्वार्थी महत्वाकांक्षा की एक दयनीय कहानी मानकर त्याग देने दो…।”

ENGLISH ORIGINAL	हिंदी अनुवाद
Krishna's gaze moved across the battlefield—towards the rivers, the forests, the dying chants of warriors. "Unfortunately, your legend is too big to be forgotten and too interesting to be left unchanged."	कृष्ण की दृष्टि रणभूमि की ओर मुड़ गई—उन नदियों, वनों और योद्धाओं के अंतिम स्वरों की ओर। "दुर्भाग्य से, आपकी गाथा विस्मृत होने के लिए बहुत बड़ी है और अपरिवर्तित छोड़ देने के लिए बहुत रोचक।"
Bhishma's face showed no emotion, only a cold, rigid stare that pierced the void.	भीष्म के चेहरे पर कोई भाव नहीं था, केवल एक ठंडी और स्थिर दृष्टि थी जो शून्य को चीर रही थी।
"You know who directs those changes—in that age, his agents will be remembered as heroes."	"तुम जानते हो कि उन परिवर्तनों को कौन निर्देशित करता है—उस युग में, उसके प्रतिनिधियों को नायकों के रूप में याद किया जाएगा।"
Finally, Bhishma had Krishna's attention. He sighed. He surrendered. Once again.	अंततः, कृष्ण भीष्म का पूरा ध्यान खींच चुके थे। भीष्म ने एक लंबी साँस भरी। उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया। एक बार फिर।
Except for a last bit of resistance.	सिवाय एक अंतिम प्रतिरोध के।
"Then tell me," Bhishma asked, "why my story?"	"तो फिर मुझे बताओ," भीष्म ने पूछा, "मेरी ही कहानी क्यों?"
"Because your silence carries truth—one no battle could reveal," Krishna replied.	"क्योंकि आपके मौन में वह सत्य है—जिसे कोई भी युद्ध प्रकट नहीं कर सकता था," कृष्ण ने उत्तर दिया।
"My voice has a price," Bhishma said, closing his eyes. "Remember, your promise?"	"मेरी वाणी की एक कीमत है," भीष्म ने अपनी आँखें मूँदते हुए कहा। "याद है, तुम्हारा वचन?"
"You want a promise to keep another promise?" Krishna laughed.	"आप एक वचन निभाने के लिए दूसरा वचन चाहते हैं?" कृष्ण हँसे।
Bhishma was silent. Then, almost a whisper— "You owe me that one thing... for which I accepted this."	भीष्म मौन रहे। फिर लगभग फुसफुसाते हुए बोले— "तुम पर मेरा वह एक ऋण है... जिसके लिए मैंने इसे स्वीकार किया था।"
Bhishma pointed to the mesh of arrows he was lying on.	भीष्म ने बाणों की उस शय्या की ओर संकेत किया जिस पर वे लेटे थे।

ENGLISH ORIGINAL	हिंदी अनुवाद
Krishna smiled, knowing the debt well. He did not answer at once.	कृष्ण मुस्कुराए, वे इस ऋण को भली-भांति जानते थे। उन्होंने तुरंत कोई उत्तर नहीं दिया।
“Thy will be done.”	"तथास्तु।”
A long pause.	एक लंबा विराम।
Krishna inclined his head. “For the remaining eight days of this war, I will be Arjuna’s charioteer by the day and beyond that…”	कृष्ण ने अपना सिर झुकाया। "इस युद्ध के शेष आठ दिनों के लिए, मैं दिन में अर्जुन का सारथी रहूँगा और उसके बाद..."
“And beyond?” Bhishma asked.	"और उसके बाद?" भीष्म ने पूछा।
“And beyond,” Krishna said, “I will be yours.”	"और उसके बाद," कृष्ण ने कहा, "मैं आपका रहूँगा।”
“Did he say eight days?” Bhishma murmured.	"क्या उसने आठ दिन कहा?" भीष्म बुदबुदाए।
Night descended upon Kurukshetra. Krishna left.	कुरुक्षेत्र पर रात उतर आई। कृष्ण चले गए।
Bhishma loosened his hold on the present as Krishna’s voice reached him one final time.	कृष्ण की वाणी अंतिम बार उन तक पहुँची, तो भीष्म ने वर्तमान पर अपनी पकड़ ढीली छोड़ दी।
“Distance yourself—from the war, from regret, from yourself. Only then can we go back.”	"स्वयं को दूर कीजिए—युद्ध से, पश्चाताप से और स्वयं से। तभी हम वापस जा सकते हैं।”
"Back to when?"	"वापस कब?"
“Back to the day Kurukshetra was born.”	"उस दिन, जब कुरुक्षेत्र का जन्म हुआ था।”
Bhishma asked, “When the land had tasted its first blood?”	भीष्म ने पूछा, "जब इस भूमि ने पहली बार रक्त का स्वाद चखा था?"

ENGLISH ORIGINAL	हिंदी अनुवाद
Krishna wasn’t there. But his voice echoed in his head.	कृष्ण वहाँ नहीं थे। किंतु उनका स्वर भीष्म के भीतर गूँज रहा था।
“Or was it born from the first drop that fell there—exactly one hundred and ten years ago?”	"या उसका जन्म उस पहली बूँद से हुआ था जो वहाँ गिरी थी—ठीक एक सौ दस वर्ष पूर्व?"